सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का समापन

जीवन में सत्कर्म नहीं होंगे तो परमात्मा का आशीर्वाद भी नहीं मिलेगा : वंदनाजी

पीपुल्स संवाददाता ● इंदौर

मो.नं. 9329494194

गोमाता की सेवा से पुण्य मिलता है। गोमाता की रक्षा करना मनुष्य का कर्तव्य है। जिस घर में गोमाता का पालन-पोषण होता है, उस घर में किसी भी व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं होती है।

यह कहना रहा श्रीमद् भागवत कथाकार वंदना श्रीजी का। अवसर था कथा प्रसंग का। उन्होंने कहा कि हर मनुष्य को गोसेवा का संकल्प लेना चाहिए। ध्यान रहें कभी अहंकारी नहीं बनें। जीवन में सत्कर्म करें, सत्कर्म नहीं होंगे तो परमात्मा का आशीर्वाद भी नहीं मिलेगा। सत्कर्म बहुत जरूरी है, व्यक्ति को किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखना चाहिए। जिस दिन परमात्मा मनुष्य के जीवन में आ जाते हैं, उस दिन से ही आनंद शुरू हो जाता है।

अति सर्वत्र वर्जयेत-जीवन में संतुलन होना चाहिए, संसार में अति कभी नहीं होना चाहिए। अति का त्याग करें। किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती है। इसीलिए कहते हैं अति सर्वत्र वर्जयेत।

कृष्ण-सुदामा चरित्र-भागवत महापुराण के अंतिम दिन वंदना श्रीजी ने लोगों को संकल्प दिलवाया कि जीवन में भगवान का स्मरण करके हर कार्य की शुरुआत करना चाहिए। कृष्ण-सुदामा चरित्र का वर्णन किया गया। महिलाओं ने भजनों पर नृत्य किया, 65 से अधिक कलाकारों ने भगवान कृष्ण की लीलाओं का मंचन किया।

व्यासपीठ का पूजन-व्यासपीठ का पूजन-अर्चन और आरती भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, विधायक रमेश मेंदोला, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, विधायक आकाश विजयवर्गीय ने की।

नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैयालाल की

भागवत कथा में मटकी फोड़ का आयोजन

इंदौर। गीता, गंगा, गोवर्धन और गाय कलियुग में प्रत्यक्ष परमात्मा के स्वरूप हैं। इनका पूजन-दर्शन समस्त मनोकामनाओं का पूर्तिकारक है। नंद के आनंद भयो का उद्घोष के साथ भावविभोर होकर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने नृत्य करके भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव आनंद के साथ मनाया। खजराना स्थित गणराज नगर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में पं. सुधांशु नागर ने जैसे ही नंद के घर आनंद भयो जय कन्हैयालाल की... का उद्घोष किया, घंटे-घड़ियाल की मंगल ध्वनि के बीच भक्तजनों ने भावविभोर होकर खूब नृत्य किया। कथास्थल पर कृष्ण लीलाओं यथा मटकी फोड़ का मंचन हुआ। पं. सुधांशु द्वारा इंद्र के घमंड को चूर करने वाली गिरिराज महाराज की कथा सुनाई। इस अवसर पर गिरिराजजी का पूजन व अभिषेक कर उन्हें छप्पन भोग लगाया गया। यजमान राजू कौशल द्वारा व्यासपीठ का पूजन किया गया।

पं. सुधांशु ने बताया कि गीता, गंगा, गोवर्धन और गाय कलियुग में प्रत्यक्ष परमात्मा के स्वरूप हैं। इनका पूजन और दर्शन समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करता है। कथा समापन के अवसर पर महाआरती हुई। तत्पश्चात प्रसादी का वितरण हुआ।